Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् की महान विचारधारा

: प्रस्तुत कर्ता :
प्रो.डॉ.प्रकाशचंद्र मोतीभाई पटेल
(एसोसिएट प्रो. इन संस्कृत)
मो.न.९४०९४१५१६२, ईमेल : prakashbhaipatel7@gmail.com

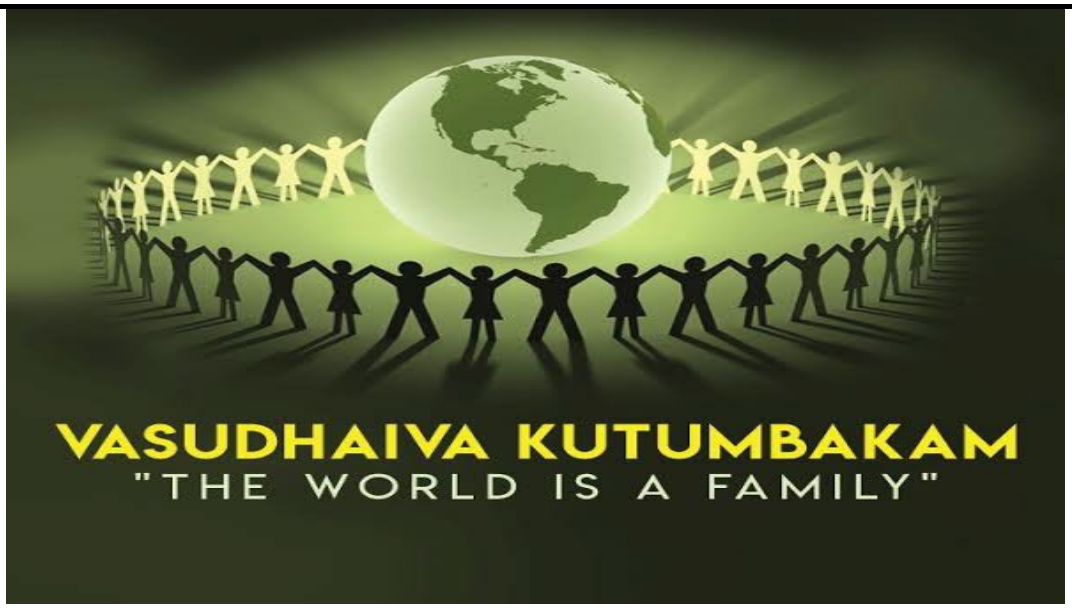

1. भूमिका

भारत केवल एक भौगोलिक राष्ट्र नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना है। भारतीय परंपरा में देश को " भारत " के रूप में पूज्य माना गया है। इसी सांस्कृतिक चेतना का मूल आधार है -"वसुधैव कुटुम्बकम्", जिसका अर्थ है *"संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है"*। यह विचारधारा भारतीय सभ्यता की आत्मा रही है, जो मानवता, करुणा, सह-अस्तित्व और विश्व बंधुत्व का संदेश देती है। भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जहाँ राष्ट्र को केवल भौगोलिक सीमा के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत चेतना के रूप में देखा गया है। भारतीय संस्कृति में देश को "भारत माता" के रूप में सम्मान और श्रद्धा दी गई है, जो त्याग, ममता और संरक्षण की प्रतीक हैं।

भारत की अवधारणा जहाँ राष्ट्रप्रेम और कर्तव्यबोध की प्रेरणा देती है, वहीं वसुधैव कुटुम्बकम् संकीर्ण भौगोलिक सीमाओं से ऊपर उठकर सम्पूर्ण मानव समाज को एक सूत्र में बाँधता है।

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जब विश्व अनेक सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय संकटों से गुजर रहा है, तब इस महान भारतीय विचारधारा की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। प्रस्तुत शोध में भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा, उनके पारस्परिक संबंध तथा समकालीन विश्व में उनकी उपयोगिता का अध्ययन किया गया है।

2. शोध का उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- भारत की संकल्पना के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व का अध्ययन करना।
- वसुधैव कुटुम्बकम् की उत्पत्ति, दार्शनिक पृष्ठभूमि एवं उसके मूल भाव को समझना।
- भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करना।
- भारतीय संस्कृति में निहित राष्ट्रप्रेम और विश्व बंधुत्व की भावना का विश्लेषण करना।
- समकालीन वैश्विक परिदृश्य में इस विचारधारा की प्रासंगिकता और उपयोगिता का मूल्यांकन करना।
- यह प्रतिपादित करना कि भारतीय राष्ट्रवाद मानवतावाद और सार्वभौमिक कल्याण से कैसे जुड़ा हुआ है।

3. भारत की संकल्पना

भारत की संकल्पना भारतीय सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना का एक सशक्त प्रतीक है। भारतीय परंपरा में भूमि को *माता* के रूप में पूजने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। ऋग्वेद में *"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"* जैसे मंत्र इस भावना को स्पष्ट करते हैं, जिनमें धरती को माता और मानव को उसका पुत्र माना गया है। इसी वैदिक दृष्टि का आधुनिक रूप है- भारत की संकल्पना।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारत की छवि ने जन-जन में राष्ट्रप्रेम, त्याग और बलिदान की भावना को जागृत किया। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित "वंदे मातरम्" ने भारत के रूप में प्रतिष्ठित किया। भारत केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता, भाषा, धर्म, परंपरा और आध्यात्मिक मूल्यों की समग्र अभिव्यक्ति हैं।

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

भारत में संकल्पना नागरिकों में कर्तव्यबोध, एकता और सामाजिक समरसता का भाव उत्पन्न करती है। यह विचार सिखाता है कि राष्ट्र के प्रति प्रेम केवल अधिकारों की मांग तक सीमित नहीं, बल्कि सेवा, त्याग और उत्तरदायित्व से जुड़ा हुआ है। भारत माता की संतान होने का अर्थ है- देश की संस्कृति की रक्षा करना, सामाजिक सद्भाव बनाए रखना और मानवता के कल्याण हेतु कार्य करना।

इस प्रकार भारत में संकल्पना भारतीय राष्ट्रवाद को भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान करती है, जो उसे केवल राजनीतिक विचारधारा से ऊपर उठाकर एक सांस्कृतिक चेतना के रूप में स्थापित करती है।

4. वसुधैव कुटुम्बकम् का दार्शनिक आधार

"वसुधैव कुटुम्बकम्" भारतीय दर्शन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सार्वभौमिक सिद्धांत है। इसका शाब्दिक अर्थ है – *संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है*। इस विचार का मूल स्रोत महाउपनिषद में प्राप्त होता है, जहाँ कहा गया है कि उदार चरित्र वाले लोग संपूर्ण विश्व को अपना परिवार मानते हैं। यह दर्शन संकीर्ण स्वार्थ, भेदभाव और अहंकार से ऊपर उठकर मानवता की एकता का संदेश देता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् का दार्शनिक आधार अद्वैत वेदांत की भावना से जुड़ा हुआ है, जो समस्त जीवों में एक ही परम सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार करता है। जब सभी प्राणी एक ही चेतना से जुड़े हैं, तब परस्पर द्वेष, हिंसा और शोषण का कोई स्थान नहीं रह जाता। इसी से *अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता और परोपकार* जैसे नैतिक मूल्य विकसित होते हैं।

यह विचारधारा भारतीय जीवन-दर्शन में सामाजिक समरसता और नैतिक आचरण को प्रोत्साहित करती है। बौद्ध, जैन और सनातन परंपराओं में भी विश्व बंधुत्व, दया और सह-अस्तित्व को प्रमुख स्थान दिया गया है। वसुधैव कुटुम्बकम् व्यक्ति को केवल अपने परिवार या समाज तक सीमित न रखकर, समस्त मानव जाति और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराता है।

इस प्रकार वसुधैव कुटुम्बकम् का दार्शनिक आधार मानवता की एक स्पष्ट, उदात्त और कल्याणकारी दृष्टि प्रस्तुत करता है, जो आज के वैश्विक समाज के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

5. भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् का अंतर्संबंध

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् दोनों ही भारतीय संस्कृति की मूल चेतना के अभिन्न अंग हैं। भारत में संकल्पना जहाँ राष्ट्र के प्रति श्रद्धा, कर्तव्य और आत्मीयता का भाव उत्पन्न करती है, वहीं वसुधैव कुटुम्बकम् उस राष्ट्रभावना को संकीर्ण सीमाओं में बंधने नहीं देता। इन दोनों विचारधाराओं का समन्वय भारतीय दर्शन को विशिष्ट और सार्वभौमिक बनाता है। भारत में भावना नागरिकों को अपने राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व निभाने, उसकी संस्कृति की रक्षा करने और समाज की सेवा करने की प्रेरणा देती है। दूसरी ओर, वसुधैव कुटुम्बकम् यह सिखाता है कि सच्चा राष्ट्रप्रेम वही है जो अन्य राष्ट्रों और संपूर्ण मानवता के प्रति भी सद्भाव और करुणा रखे। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद आक्रामक या संकीर्ण न होकर मानवतावादी और नैतिक स्वरूप ग्रहण करता है।

भारत में संतान होने का अर्थ केवल देश की सीमाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि संपूर्ण विश्व को अपना परिवार मानने की दृष्टि विकसित करता है। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे मंत्रों के माध्यम से समस्त विश्व के कल्याण की कामना की गई है। भारत की विदेश नीति, सांस्कृतिक संवाद और शांति प्रयासों में भी इसी विचारधारा की झलक मिलती है। कहा जा सकता है कि भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् का अंतर्संबंध राष्ट्रभक्ति और विश्वबंधुत्व के बीच संतुलन स्थापित करता है। यह समन्वय भारत को न केवल एक राष्ट्र, बल्कि मानवता का मार्गदर्शक बनाता है।

6. समकालीन विश्व में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में विश्व अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें युद्ध, आतंकवाद, नस्लवाद, आर्थिक असमानता, पर्यावरण संकट और सांस्कृतिक टकराव प्रमुख हैं। ऐसी परिस्थितियों में भारत माता और वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा अत्यंत प्रासंगिक और मार्गदर्शक सिद्ध होती है। यह दर्शन संकीर्ण राष्ट्रवाद, स्वार्थ और हिंसा के स्थान पर सहयोग, सह-अस्तित्व और मानवता की भावना को प्रोत्साहित करता है। G20 जैसे वैश्विक मंचों पर भी भारत ने इस विचार को पुनः स्थापित किया है।

वैश्वीकरण के इस युग में देशों के बीच परस्पर निर्भरता बढ़ी है। पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, महामारी नियंत्रण और विश्व शांति जैसे मुद्दे किसी एक राष्ट्र द्वारा अकेले हल नहीं किए जा सकते। वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धांत यह सिखाता है कि पृथ्वी एक साझा परिवार है और इसके संसाधनों की रक्षा तथा मानव कल्याण की जिम्मेदारी सभी की है। भारत माता की विचारधारा इसी वैश्विक उत्तरदायित्व को नैतिक आधार प्रदान करती है।

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

आज जब भौतिक प्रगति के साथ-साथ मानवीय संवेदनाएँ कमजोर पड़ती जा रही हैं, तब यह भारतीय दर्शन करुणा, सहिष्णुता और नैतिकता को पुनः स्थापित करता है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत द्वारा शांति, संवाद और सहयोग पर दिया गया बल इसी विचारधारा का प्रतिबिंब है। यह दर्शन विश्व को संघर्ष से संवाद की ओर और विभाजन से एकता की ओर ले जाने की क्षमता रखता है। इस प्रकार समकालीन विश्व में भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा न केवल प्रासंगिक है, बल्कि वैश्विक शांति, सतत विकास और मानव कल्याण के लिए अनिवार्य मार्गदर्शन प्रदान करती है।

7. निष्कर्ष

भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा है। भारत की संकल्पना जहाँ राष्ट्रप्रेम, कर्तव्यबोध और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करती है, वहीं वसुधैव कुटुम्बकम् संपूर्ण मानवता के प्रति करुणा, सह-अस्तित्व और विश्व बंधुत्व की भावना का विस्तार करता है। इन दोनों का समन्वय भारतीय दर्शन को न केवल राष्ट्रीय, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रासंगिक बनाता है।

यह विचारधारा यह सिखाती है कि सच्चा राष्ट्रवाद कभी भी संकीर्ण या आक्रामक नहीं होता, बल्कि वह मानवतावादी और कल्याणकारी होता है। भारत माता की संतान होने का अर्थ है- अपने देश के प्रति निष्ठावान रहते हुए संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिए कार्य करना। वर्तमान वैश्विक संकटों के संदर्भ में यह दर्शन शांति, सहयोग और नैतिक मूल्यों का प्रभावी मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह कहा जा सकता है कि यदि आधुनिक विश्व भारत माता और वसुधैव कुटुम्बकम् की महान विचारधारा को आत्मसात करे, तो वैश्विक समरसता, स्थायी विकास और विश्व शांति की दिशा में एक सार्थक और सुदृढ़ मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

: संदर्भ ग्रंथ :

1. महाउपनिषद, भारतीय दर्शन का प्रामाणिक ग्रंथ।
2. राधाकृष्णन, डॉ. सर्वपल्ली, *भारतीय दर्शन*।
3. दिनकर, रामधारी सिंह, *संस्कृति के चार अध्याय*।
4. बिपिन चंद्र, *आधुनिक भारत का इतिहास*।
5. चट्टोपाध्याय, बंकिमचंद्र, *वंदे मातरम्*।
6. वेद एवं उपनिषद (ऋग्वेद, यजुर्वेद), वैदिक साहित्य।
7. नायर, वी. आर., *भारतीय संस्कृति और विश्व दृष्टि*।

8. अरविंद, श्री, *भारत की आत्मा* (The Soul of India)।